अशोक वाजपेयी

धीरे-से

प्राचीन शब्दों में घिरा हुआ समय
धीरे-से आता है पास
धीरे-से पूछते हैं हम
देवताओं से हालचाल —

धीरे-से खुलता है द्वार एक
अनन्त में
धीरे-से फूटता उसके अंगों से उजास —

पल्लवों-पताकाओं के बीच
धीरे-से होता है सूर्यास्त
धीरे-से उसका शरीर होता है अरुणाभ
पक्षियों और चट्टानों के संगीत के बीच
धीरे-से जागता है सूर्य ।

अशोक वाजपेयी, तिनका तिनका
दिल्ली, प्रवीन प्रकाशन 1996:I.367